बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)
Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 130 /2025) Year: 7th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 20.05.2025

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	१. संभावित अधिक तापमान के मद्देनजर कद्दू वर्गीय, बैगन, टमाटर, मिर्च तथा भिंडी की खड़ी फसलों में मृदा जल एवं खरपतवार प्रबंधन करें। २.ग्रीष्म कालीन उत्पाद हेतु रोपित टमाटर, बैगन व मिर्च की फसलों में समुचित नमी बनाए रखें ताकि अत्यधिक तापमान से पुष्पपतन कम हो। ३. मिर्च, टमाटर, बैगन, भिंडी में सफेद मक्खी व अन्य चूसने वाले कीट आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें। ४. ग्रीष्म ऋतु की नव रोपित फसलों में मृदा नमी संरक्षणहेतु सूखी घास या पुआल का पलवार प्रयोग करें। ५. वर्षा ऋतु में सब्जियों की खेती के लिए चिन्हित खेतों की जुताई कर दें ताकि रोग कीट तथा खरपतवार के बीज नष्ट हो जाय।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	***शस्य-प्रबंधन*** ➢ गर्मी की जुताई पूर्ण कर खेत को खुला छोड़ दें ताकि कीट के अंडे– बच्चे, रोगजनक एवं खरपतवार के बीज आदि नष्ट हो जायें। ➢ वर्षा से पूर्व खेत में अच्छी मेड़बन्दी कर दें, जिससे खेत की मिट्टी न बहे तथा खेत वर्षा का पानी सोख सके। ➢ उर्द, मूँग तथा चारे की फसलों में समय समय पर सिचाई करते रहें । ➢ जायद में बोई गई उर्द की कटाई मड़ाई का कार्य तथा मूँग की फलियों की तुड़ाई का कार्य जून माह के अंत तक अवश्य पूरा कर लें। ➢ चारे के लिए ज्वार, लोबिया व बहुकटाई वाली चरी की बोआई कर दें। ➢ खरीफ फसलों की बोयाई के लिए अच्छे बीज, खाद आदि का प्रबंध समय पूर्व सुनिश्चित कर लें । ➢ खरीफ फसल में खरपतवार का प्रकोप भी ज्यादा होता है, इसके नियंत्रण हेतु कुछ शाकनाशी जैसे धान के लिए बिस्पायरिबैक सोडियम (नोमिनो गोल्ड), दलहन हेतु पेंदिमेथालिन, अरहर के लिए इमेजाथापीर नामक दवा आदि का प्रबंध ससमय सुनिश्चित कर लें । ***मृदा-प्रबंधन*** ➢ जिन किसान भाईयों ने कम्पोस्ट बनाने हेतु गढ्ढा (पिट) अथवा नाडेप संरचना बना रखी है वर्षा से पूर्व भरना सुनिष्चित करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें।

		➢ जिन किसान भाईयों ने गोबर की खाद को अभी तक खेतों में नही पहुचाया है वो किसान भाई अतिप्रीघ्र यह कार्य पूर्ण करलें। ➢ विगत में मिट्टी परीक्षण हेतु भेजे गये मृदा नमूना परीक्षण की रिपोर्ट एकत्र कर नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से चर्चा कर खरीफ फसलो हेतु फसलानुसार उर्वरको की व्यवस्था करें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ इस महीने में तापमान की अधिकता एवं धूल भरी आँधी की प्रचुरता इस क्षेत्र में काफी आम है। जिस कारण मानव जीवन ही नहीं अपितु पशु पक्षीयों का जीवन भी प्रभावित हो रहा है। ➢ जानवरों में गर्मी से संबंधित रोग जैसे बुखार, निर्जलीकरण, शरीर के लवण में कमी, भूख में कमी और उत्पादकता में कमी इस दौरान जानवरों में देखे जा सकते हैं। ➢ जानवरों को तेज गर्मी व दोपहर की गर्म हवाओं(लू) इत्यादि से बचाया जाना चाहिए। ➢ पशुओं के चारे एवं भोजन में कमी न आये इस हेतु वर्तमान अवधि में चारा संग्रह, खरीद और भंडारण के लिए पर्याप्त प्रयास किए जाने चाहिए। ➢ पशुओं को शरीर के आवश्यक लवणों के क्षय से बचाने के लिए उपाय करने चाहिये। सुनिश्चित करें कि उचित मात्रा में नमक, चूना व खनिज मिश्रण भोजन के साथ दिया जाना चाहिये। ➢ दुधारू पशुओं को संतुलित आहार दें ताकि उनकी दूध उत्पादन क्षमता बढ़े। मौसम के आधार पर, पशु चारा की सामग्री को बदलना चाहिए। इस समय पशु भोजन में गेहूँ का दलिया या चोकर और ज्वार की मात्रा बढ़ाएँ। ➢ पशुओं को अन्तः परजीवीनाशक व वाहय परजीवीनाशक दवाइयॉ देनी चाहिये जिससे इन परजीवीयों का प्रसार न हो सके। ➢ मक्का, बारहमासी घास और अन्य चारा फसलों को चारे हेतु अभी काटा जाना चाहिए। ➢ इस महीने के दौरान भेड़ों से ऊन उतारने का कार्य भेड पालको को करना चाहिए।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ मूँग/उर्द में फली बेधक कीट के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। जैविक नियंत्रण हेतु बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिड़काव करना चाहिए अथवा एजाडिरैक्टिन (नीम आयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 1.25 ली0 प्रति

		हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करें अथवा स्पाइनोसैड 0.4 मिली0 प्रति ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ मूँग/उर्द/भिण्डी/लोबिया/कद्दू वर्गीय सब्जियों आदि में पीत शिरा मोजैक/पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु हेतु पीला चिपचिपा ट्रैप का प्रयोग करें। थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्ल्यू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर पानी मे घोलकर 15 दिन के अंतराल पर आवश्यकता अनुसार छिड़काव करें। ➢ कद्दू वर्गीय सब्जियों में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु क्षतिग्रस्त फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। क्यू ल्योर + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने मे घोल मे 5 ग 5 ग 1.5 मिमी0 के प्लाई वुड के टुकड़ों को एक सप्ताह तक शोधित कर कर ट्रैप लगाना चाहिये। ➢ टमाटर में फल छेदक एवं बैंगन में कलंगी एवं फल बेधक कीट से बचाव हेतु ग्रसित फलों तथा प्रभावित कलंगी को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। ➢ दीमक के जैविक नियंत्रण हेतु ब्यूवेरिया वैसियाना 1.15 प्रतिशत बायोपेस्टीसाइड की 2.5 किग्रा0 मात्रा को 60–70 किग्रा0 गोबर की खाद में मिलाकर प्रति हे0 की दर से भूमि शोधन करना चाहिये। ➢ आम में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु मिथाइल यूजीनाल + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने मे घोल में 5 ग 5 ग 1.5 मिमी0 के प्लाई वुड के टुकड़ों को शोधित कर ट्रैप लगाना चाहिये। 12–15 ट्रैप प्रति हे0 की दर से प्रयोग करें।
5-	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ किसानों को फसलों में होने रोगों से बचाव हेतु निम्नलिखित सलाह दी जाती है: ➢ 1ण धान (धान की नर्सरी एवं रोपाई की तैयारी) ➢ संभावित रोग:झुलसा रोग नर्सरी में ,गलन रोग) ➢ सलाह: ➢ बीज उपचार: कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या थिरम 3 ग्राम/किलोग्राम बीज। ➢ नर्सरी में फफूंदनाशी छिड़काव: ➢ कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी या ➢ मैनकोजेब 2ण5 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करें। ➢ नर्सरी जलभराव से बचाएंए उच्च उठे क्यारी बनाएं। ➢ प्रति वर्ग मीटर में बीज की मात्रा 50.60 ग्राम से अधिक न हो। ➢ 2ण अरहर / मूंग / उड़द (दलहनी फसलें) ➢ संभावित रोग:रूट रॉट (जड़ सड़न) पत्ती मुरझाना

		➢ पत्तियों पर धब्बे ➢ सलाह: ➢ बीजोपचार: ➢ ट्राइकोडर्मा 5 ग्राम/किग्रा बीज ➢ पौधों पर रोग दिखे तो कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर छिड़कें। ➢ जल निकासी की अच्छी व्यवस्था करें। ➢ 3ण तिलए सोयाबीनए मूंगफली (तिलहन फसलें) ➢ संभावित रोग: एन्थ्रेक्नोजए।पत्ती धब्बा, ;गठान सड़न) ➢ सलाह: ➢ बीजोपचार: ➢ थिरम + कार्बेन्डाजिम (2रू1द्ध मिश्रण 3 ग्राम/किग्रा बीज ➢ खेतों में रोगग्रस्त पौधों को निकालकर जला दें। ➢ रोग लक्षण दिखें तो मैनकोजेब 2ण्5 ग्राम/लीटर या हैक्साकोनाजोल 1 मि.ली./लीटर का छिड़काव करें। ➢ सब्ज़ियाँ (टोमेटोए बैंगनए मिर्चए लौकीए करेला आदि) ➢ संभावित रोग: ➢ झुलसा रोग ➢ मौज़ेक / लीफ कर्ल वायरस ➢ डैम्पिंग ऑफ (गलन रोग) ➢ सलाह: ➢ नीम खली का प्रयोग (250.300 किग्रा/हेक्टेयर) करें। ➢ वायरस रोग से संक्रमित पौधों को उखाड़कर नष्ट करें। ➢ सफेद मक्खी और थ्रिप्स पर नियंत्रण: ➢ इमिडाक्लोप्रिड 0ण्3 मि.ली./लीटर या ➢ नीम आधारित कीटनाशी 5 मि.ली./लीटर ➢ फफूंदनाशी के रूप में: ➢ कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3 ग्राम/लीटर या ➢ मैन्कोज़ेब + मेटालेक्सिल (रिडोमिल गोल्ड) 2ण्5 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें। ➢ 5ण मक्का (यदि प्रारंभिक बुवाई की गई है) ➢ संभावित रोग: ➢ टुरसीलिस रोग ➢ पत्तियों पर धब्बे ➢ सलाह: ➢ बीज उपचार करें: ➢ मेटालेक्सिल ग्राम/किग्रा बीज ➢ रोग दिखने पर: ➢ मैन्कोज़ेब + मेटालेक्सिल ग्राम/लीटर का छिड़काव।

		➢ 6ण सामान्य जैविक उपाय (सभी फसलों के लिए उपयोगी) ➢ ट्राइकोडर्मा विर्डीए बीवेरिया बेसियानाए पेसिलोमाइसिसए नीम तेल आदि का उपयोग करें। ➢ खेत में फसल अवशेष न जलाएंए रोग फैलने की संभावना बढ़ती है। ➢ समय पर फसल चक्र अपनाएं। ➢
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	➢ Not received
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ Not received

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय डॉ मयंक दुबे	6. डॉ दिनेश गुप्ता 7. डॉ पंकज कुमार ओझा 8. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 9. डॉ जगन्नाथ पाठक 10. डॉ धर्मेन्द्र कुमार
	11.